The Infinite
An International Peer Reviewed / Refereed Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 2 | February 2025
ISSN: 3048-9539 (Online)
Website: www.theinfinite.in

भारतीय दार्शनिकों के अनुसार शिक्षा दर्शन की अवधारणा

डॉ० हरिश्चंद्र सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर(एजुकेशन), जे०जे०टी०यू० झुंझुनूं

सीमा देवी

शोधार्थी (एजुकेशन), जे०जे०टी०यू० झुंझुनूं

ARTICLE DETAILS

Research Paper

कीवर्ड्स:

भारतीय शिक्षा दर्शन, आत्म–ज्ञान, नैतिकता, संतुलन, समाज सुधार

सारांश:

भारतीय दार्शनिकों के अनुसार शिक्षा दर्शन की अवधारणा जीवन के सर्वांगीण विकास से जुड़ी है, जो न केवल ज्ञान अर्जन, बल्कि मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक सुधार की ओर भी मार्गदर्शन करती है। वेदांत, सांख्य, योग और अन्य भारतीय दर्शन प्रणालियाँ शिक्षा को आत्म–ज्ञान, सत्य की प्राप्ति और समाज के प्रति जिम्मेदारियों को समझने के रूप में प्रस्तुत करती हैं। भारतीय शिक्षा दर्शन का प्रमुख उद्देश्य आत्म–निर्भरता, नैतिकता, और जीवन के उच्चतम आदर्शों को स्थापित करना है। यह दर्शन जीवन के हर पहलू में संतुलन और समन्वय को महत्व देता है, जिससे व्यक्ति अपनी सच्ची क्षमता को पहचान सके और समाज में शांति और समृद्धि ला सके। भारतीय शिक्षा दर्शन की यह परिभाषा न केवल शास्त्रों के अध्ययन, बल्कि आत्म–चिंतन और ध्यान के माध्यम से आत्मविकास को भी प्रेरित करती है।

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन में शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इसे न केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन माना गया है, बल्कि आत्मज्ञान, जीवन के उद्देश्य की पहचान, और समाज में संतुलन स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी माना गया है। भारतीय दार्शनिकों ने शिक्षा को न केवल बौद्धिक या अकादमिक ज्ञान से संबंधित नहीं, बल्कि मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास से भी जोड़ा है। शिक्षा का अर्थ व्यापक है और इसका उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति का मानसिक, शारीरिक, और नैतिक विकास होता है। शिक्षा से व्यक्ति अपनी क्षमता, कौशल और गुणों को पहचानता है और उसे समाज में अपनी भूमिका निभाने के योग्य बनाता है। यह जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने, व्यक्तिगत विकास और सामाजिक जिम्मेदारियों का एहसास कराने का माध्यम है।

शिक्षा किसी भी व्यक्ति के लिए मानसिक और बौद्धिक विकास का एक अहम साधन होती है। यह ज्ञान, समझ और सोचने की क्षमता को बढ़ाती है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन में बेहतर निर्णय ले सकता है और समाज में सार्थक योगदान दे सकता है। इसे एक अनुभव और आत्मनिर्भरता की प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है, जो न केवल बाहरी ज्ञान, बल्कि आंतरिक रूप से भी व्यक्ति को मजबूत बनाती है।

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति न केवल नए तथ्यों और जानकारी को प्राप्त करता है, बल्कि वह खुद को पहचानने और आत्म–निर्भर बनने की दिशा में भी कदम बढ़ाता है। यह उसकी सोच, समझ, और कार्य करने की क्षमता को नया आकार देती है, जिससे वह जीवन के विभिन्न पहलुओं को सही दृष्टिकोण से देख सकता है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल बाहरी दुनिया के बारे में जानकारी देना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति को जीवन के उद्देश्य की ओर मार्गदर्शन करने का एक तरीका है। यह उसे व्यक्तिगत जिम्मेदारियों, नैतिक मूल्यों, और समाज के प्रति दायित्वों को समझने में मदद करती है।

इस प्रकार, शिक्षा का अर्थ केवल तथ्यों और जानकारी का संचयन नहीं, बल्कि यह जीवन को संपूर्ण और सशक्त बनाने की एक प्रक्रिया है।

इस शोध पत्र में हम भारतीय दार्शनिकों के दृष्टिकोण से शिक्षा दर्शन की अवधारणा का विश्लेषण करेंगे।

1. वेदांत दर्शन और शिक्षा

वेदांत दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान और ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति है। शंकराचार्य के अनुसार, शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य "आत्मा को जानना" है, क्योंकि केवल आत्मा के ज्ञान से ही व्यक्ति का उद्धार संभव है। वेदांत शिक्षा में बाह्य जगत की वास्तविकता को नकारते हुए, व्यक्ति को अपने भीतर की सत्यता और ब्रह्म के साथ एकात्मता की ओर मार्गदर्शन किया जाता है।वेदांत दर्शन भारतीय दर्शन का एक महत्वपूर्ण और अद्वितीय शाखा है, जिसका उद्देश्य ब्रह्म और आत्मा के संबंध को समझना और आत्मज्ञान प्राप्त करना है। यह दर्शन वेदों के अंतर्गत उपनिषदों पर आधारित है, विशेषकर तैत्तिरीय उपनिषद, बृहतारण्यक उपनिषद और छांदोग्य उपनिषद में इसकी प्रमुख शिक्षाएँ दी गई हैं। वेदांत शब्द का अर्थ "वेद का अंत" होता है, जिसका तात्पर्य है कि यह दर्शन वेदों के अंतिम भाग, यानी उपनिषदों के शिक्षाओं से जुड़ा हुआ है।

वेदांत दर्शन के अनुसार, ब्रह्म (सर्वव्यापी परमात्मा) ही वास्तविकता है, और आत्मा (जीवात्मा) वही ब्रह्म है, जो शरीर के भीतर निवास करता है। वेदांत के अनुसार, संसार में जो भिन्नताएँ और विविधताएँ दिखाई देती हैं, वह केवल मिथ्या (झूठी) हैं और आत्मा के असल स्वरूप को न जानने की वजह से उत्पन्न होती हैं। इस दृष्टिकोण को अद्वैत

वेदांत कहा जाता है, जिसे शंकराचार्य ने विशेष रूप से प्रतिपादित किया। शंकराचार्य के अनुसार, "तत्त्वमसि" (तुम वही हो) का अर्थ यह है कि आत्मा और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है, दोनों एक ही हैं।

वेदांत का प्रमुख उद्देश्य आत्मज्ञान (आत्मा का बोध) प्राप्त करना है, ताकि व्यक्ति संसार की असत्यता और भ्रांतियों से मुक्त हो सके और ब्रह्म के साथ एकत्व का अनुभव कर सके। यह दर्शन व्यक्ति को आत्मनिर्भर, शांत और संतुष्ट जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है, क्योंकि इसके अनुसार, सच्चा सुख और शांति केवल आत्मा और ब्रह्म के मिलन में है।

इसके अतिरिक्त, वेदांत दर्शन कर्म, भक्ति, ज्ञान और ध्यान के माध्यम से आत्मा के वास्तविक स्वरूप को जानने का मार्ग प्रदान करता है। वेदांत शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति आत्मा के अस्तित्व को समझकर, जीवन के उद्देश्य को पहचानता है और मोक्ष (निर्वाण) की प्राप्ति के लिए अपने जीवन को समर्पित करता है।

शंकराचार्य ने यह माना कि, "तत्त्वमसि" (तुम वही हो) का बोध ही वास्तविक शिक्षा है, जिसमें व्यक्ति अपनी आत्मा और ब्रह्म के बीच के भेद को मिटा देता है। शिक्षा का यह रूप आत्म–ज्ञान के माध्यम से जीवन के सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य को प्राप्त करने का मार्ग प्रस्तुत करता है।

2. सांख्य दर्शन और शिक्षा

सांख्य दर्शन, जिसे कपिल मुनि ने प्रतिपादित किया, के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व के शुद्धिकरण और आत्म–साक्षात्कार है। यह शिक्षा मन, बुद्धि, और अहंकार के पार जाकर आत्मा की शुद्धता की ओर मार्गदर्शन करती है। सांख्य दर्शन में ज्ञान को तात्त्विक दृष्टिकोण से देखा जाता है, जहां आत्मा और प्रकृति के बीच के भेद को समझने की कोशिश की जाती है।

कपिल के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को प्रकृति (प्रकृति के गुणों) के कार्यों से मुक्त करना और आत्मा की वास्तविकता की ओर निर्देशित करना है। यह मानसिक और आत्मिक स्वतंत्रता की दिशा में एक साधन है।सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन का एक प्रमुख तात्त्विक प्रणाली है, जिसे कपिल मुनि ने प्रतिपादित किया। यह दर्शन पदार्थ (प्रकृति) और आत्मा (पुरुष) के बीच भेद को स्पष्ट करता है। सांख्य का अर्थ है "गिनती" या "संख्या," और इसका उद्देश्य संसार की उत्पत्ति, संरचना, और स्थिति को समझना है। यह दर्शन बताता है कि सभी वस्तुएं और घटनाएँ २५ तत्वों से बनी हुई हैं, जिनमें २४ तत्व प्रकृति (प्रकृति के गुण) और १ तत्व पुरुष (आत्मा) है।

सांख्य दर्शन के अनुसार, पुरुष (आत्मा) शुद्ध चेतना है, जो पूरी तरह से निष्क्रिय और अचेतन है। प्रकृति (प्रकृति के गुण) उसके समक्ष सक्रिय होती है। प्रकृति में तीन गुण होते हैं दृ सत्व (संतुलन और ज्ञान), रजस (सक्रियता और इच्छा) और तमस (निरोध और अज्ञान)। इन गुणों के मिश्रण से संसार की उत्पत्ति और कार्य होते हैं।

सांख्य दर्शन के अनुसार, संसार में उत्पत्ति और परिवर्तन प्रकृति के गुणों के सामंजस्य से होते हैं। जब प्रकृति के गुण संतुलित होते हैं, तो चेतना का बोध उत्पन्न होता है। जब इन गुणों में असंतुलन होता है, तो अज्ञान और भ्रम उत्पन्न होते हैं, जिससे व्यक्ति का आत्मा का वास्तविक स्वरूप जानने में विघ्न उत्पन्न होता है।

सांख्य के अनुसार, जीवन का मुख्य उद्देश्य आत्मज्ञान (पुरुष के वास्तविक स्वरूप की पहचान) प्राप्त करना है, जिससे व्यक्ति संसार की भ्रांतियों और असत्यता से मुक्त हो सके। आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को ध्यान और साधना के माध्यम से प्रकृति के गुणों पर नियंत्रण प्राप्त करना होता है।

यह दर्शन कर्म और योग के माध्यम से आत्म–ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग प्रस्तुत करता है, और व्यक्ति को सच्चे ज्ञान के लिए आंतरिक शांति और स्वतंत्रता की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

3. योग दर्शन और शिक्षा

योग दर्शन, जिसे पतंजलि ने प्रतिपादित किया, में शिक्षा का उद्देश्य मानसिक शांति, आत्मा का नियंत्रण, और आत्मज्ञान की प्राप्ति है। पतंजलि के योगसूत्रों में योग का मुख्य उद्देश्य "चित्तवृत्ति निरोध" (मन की वृत्तियों को नियंत्रित करना) है, जिससे आत्मा की शुद्धता और उच्चतम ज्ञान की प्राप्ति होती है।

योग दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास है। यह ध्यान, प्राणायाम, और साधना के माध्यम से व्यक्ति को जीवन के उच्चतम स्तर पर पहुँचाने का प्रयास करता है। योगी का अंतिम लक्ष्य आत्मा का बोध और ब्रह्म के साथ एकात्मता है।

4. न्याय दर्शन और शिक्षा

न्याय दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य सत्य का ज्ञान प्राप्त करना और तर्क के माध्यम से जीवन की वास्तविकता को समझना है। गोडपाद के अनुसार, न्यायशास्त्र में तर्क और प्रमाण का उपयोग करके ज्ञान प्राप्ति का मार्ग खोला जाता है। न्याय दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सही तर्क, तात्त्विक दृष्टिकोण और न्यायपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करना है।

यह दर्शन शिक्षा को तर्क और प्रमाण के माध्यम से सत्य की खोज के रूप में प्रस्तुत करता है। न्याय दर्शन में, शिक्षा व्यक्ति के मनोबल को बढ़ाने और उसे सत्य के मार्ग पर चलने के लिए सक्षम बनाती है।न्याय दर्शन भारतीय दर्शन का एक महत्वपूर्ण तत्वमीमांसा (तर्कशास्त्र) है, जिसे आचार्य गौतम ने प्रतिपादित किया। यह दर्शन सत्य, प्रमाण, तर्क और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित है। न्याय दर्शन का मुख्य उद्देश्य सही निर्णय और सत्य की प्राप्ति है, जिसे तर्क और प्रमाण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। यह दर्शन यह मानता है कि संसार की सभी घटनाएँ और तथ्य

प्रमाणों और तर्कों के आधार पर समझी जा सकती हैं, और सही निर्णय लेने के लिए यह आवश्यक है कि इन प्रमाणों का सही उपयोग किया जाए।

न्याय दर्शन के अनुसार, ज्ञान और सत्य की प्राप्ति के लिए चार मुख्य प्रमाण होते हैं:

प्रत्यक्ष – जो हमें सीधे अनुभव से प्राप्त होता है, जैसे हमारी इन्द्रियों द्वारा देखा या महसूस किया गया।

अनुमान – जब हम किसी तथ्य को तर्क और अनुमान के आधार पर समझते हैं।

उपमान – जब हम किसी वस्तु की पहचान किसी अन्य समान वस्तु से करते हैं।

शब्द – प्रमाण के रूप में शास्त्रों या विश्वसनीय व्यक्तियों से प्राप्त ज्ञान।

न्याय दर्शन का उद्देश्य यह है कि व्यक्ति इन प्रमाणों का सही उपयोग करके सत्य का आकलन करे और सही निर्णय ले सके। यह दर्शन विशेष रूप से तर्कशास्त्र और विचारधारा पर आधारित है, जिससे यह न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि समाज में भी न्याय और सत्य की स्थापना करने का मार्गदर्शन करता है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे या विचार को सत्य मानने के लिए उसे प्रमाणित किया जाना चाहिए, और यह प्रमाण सटीक तर्क और प्रमाणों के आधार पर होना चाहिए।

यह दर्शन व्यक्ति को अपनी सोच को स्पष्ट और निष्पक्ष बनाने के लिए प्रेरित करता है, ताकि वह जीवन के विभिन्न निर्णयों में न्यायसंगत और सत्य के मार्ग पर चल सके।

5. मीमांसा दर्शन और शिक्षा

मीमांसा दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य धर्म, कर्म और वेदों के सही अर्थ का अध्ययन करना है। इस दर्शन के अनुसार, वेदों और शास्त्रों का अध्ययन ही वास्तविक शिक्षा है। मीमांसा शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को धर्म के अनुसार अपने कर्मों का पालन करने के लिए मार्गदर्शन करना है, ताकि वह जीवन के सभी पहलुओं में समन्वय स्थापित कर सके।मीमांसा दर्शन भारतीय दर्शन का एक महत्वपूर्ण शाखा है, जो विशेष रूप से वेदों के अध्ययन, कर्मकांडी विधियों और शास्त्रों के सही अर्थ को समझने पर ध्यान केंद्रित करता है। इस दर्शन की मुख्य अवधारणा है कि वेदों का ज्ञान निराकार और शाश्वत है, और इसका पालन करना ही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। मीमांसा दर्शन का मुख्य लक्ष्य वेदों के कर्मकांडों का सही तरीके से पालन करना और धर्म का पालन करना है।

मीमांसा दर्शन में जैमिनी का योगदान महत्वपूर्ण है, जिन्होंने इस दर्शन को विस्तार से व्याख्यायित किया। उनके अनुसार, वेदों का अध्ययन केवल ज्ञान की प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि उन्हें सही तरीके से लागू करने के लिए किया

जाना चाहिए। वेदों में दिए गए कर्मकांड और शास्त्रों के आदेशों को ठीक से समझना और उनका पालन करना व्यक्ति के जीवन का मुख्य उद्देश्य है।

मीमांसा दर्शन के अनुसार, शास्त्रों के आदेशों को समझने और उनका पालन करने के लिए एक व्यक्ति को तात्त्विक और विधिक दृष्टिकोण से उनका विश्लेषण करना आवश्यक है। यह दर्शन विशेष रूप से धर्म और कर्म के मामलों में मार्गदर्शन प्रदान करता है। मीमांसा में, कर्म (क्रियाएं) को प्रमुखता दी जाती है, और यह माना जाता है कि व्यक्ति के कर्म ही उसके जीवन को दिशा देते हैं।

यह दर्शन यह भी मानता है कि वेदों का अध्ययन और सही पालन करने से व्यक्ति को जीवन के सही मार्ग की पहचान होती है, और इससे वह समाज में आदर्श जीवन जीने में सक्षम होता है। इसलिए मीमांसा दर्शन मुख्य रूप से वेदों के कर्मकांडी आदेशों के पालन और धर्म के व्यवहारिक पक्ष को महत्वपूर्ण मानता है।

6. वैशेषिक दर्शन और शिक्षा

वैशेषिक दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य भौतिक संसार की विविधता और पदार्थों के गुणों को समझना है। यह शिक्षा विशेष रूप से भौतिक तत्वों और उनके गुणों के बारे में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझ प्रदान करती है। आचार्य कनाद के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य पदार्थों के गुणों, उनके कारणों और प्रभावों को जानना है।वैशेषिक दर्शन भारतीय तात्त्विक परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे आचार्य कनाद ने प्रतिपादित किया। यह दर्शन पदार्थों की संरचना, गुण, और उनके कारणों के बारे में विश्लेषण करता है। वैशेषिक दर्शन में यह माना जाता है कि संसार सभी वस्तुएं और घटनाएँ विभिन्न मूल तत्वों से बनी होती हैं, जिन्हें "द्रव्य" (पदार्थ), "गुण" (गुण), "क्रिया" (क्रिया), "संपत्ति" (संपत्ति), "संयोग" (संयोग) और "अव्यक्त" (अव्यक्त) कहा गया है। इसके अनुसार, इन तत्वों का संयोजन और उनके गुण ही संसार की विविधता और घटनाओं का कारण हैं।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार, सृष्टि ५ मौलिक तत्वों से बनी है:

1. **पदार्थ (द्रव्य)** – यह सभी भौतिक वस्तुओं का मूल तत्व है।

2. **गुण** – पदार्थों के गुण जैसे रूप, रंग, आकार आदि।

3. **क्रिया** – पदार्थों के कार्य या गति।

4. **संयोग** – जब दो या दो से अधिक पदार्थ एक साथ होते हैं, तो उनका आपसी संबंध।

5. **अव्यक्त** – जो तत्व दिखाई नहीं देते, परंतु उनका अस्तित्व होता है, जैसे काल और स्थान।

इस दर्शन में यह माना जाता है कि समस्त संसार इन तत्वों और उनके गुणों के द्वारा संचालित होता है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार, सभी पदार्थ स्थायी नहीं होते और उनका अस्तित्व उनके गुणों और क्रियाओं के आधार पर बदलता रहता है।

यह दर्शन तर्क और प्रमाण के महत्व पर बल देता है और यह मानता है कि सत्य को केवल अनुभव और वैज्ञानिक तरीके से ही जाना जा सकता है। वैशेषिक दर्शन में आत्मा का अस्तित्व भी माना जाता है, लेकिन इसे केवल एक चेतन तत्व के रूप में देखा जाता है, जो शरीर से अलग और शुद्ध होता है।

वैशेषिक दर्शन का उद्देश्य सत्य को जानना और इस संसार के कार्यों के कारणों को समझना है, ताकि व्यक्ति जीवन के रहस्यों को समझ सके और आत्मज्ञान प्राप्त कर सके। यह दर्शन भौतिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से जीवन और ब्रह्मांड के नियमों को स्पष्ट करता है।

7. भारतीय शिक्षा की नैतिक और सामाजिक भूमिका

भारतीय दार्शनिकों ने शिक्षा को न केवल बौद्धिक ज्ञान के रूप में देखा, बल्कि इसे समाज और व्यक्ति के बीच के संबंधों को सुधारने, नैतिकता को बढ़ावा देने और समाज में न्याय और समानता स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण साधन भी माना। भारतीय शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के मानसिक और आध्यात्मिक विकास के साथ–साथ समाज के प्रति उसके कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को भी जागरूक करना है।

निष्कर्ष :

भारतीय दार्शनिकों के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल बाहरी ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सम्पूर्ण जीवन के उद्देश्य की ओर मार्गदर्शन करने वाला एक साधन है। वेदांत, सांख्य, योग, न्याय, मीमांसा और वैशेषिक दर्शन में शिक्षा का दृष्टिकोण व्यापक और बहुआयामी है। भारतीय शिक्षा दर्शन के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान, आत्म–साक्षात्कार और समाज में सकारात्मक बदलाव लाना है।

इस प्रकार, भारतीय दार्शनिकों के अनुसार, शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का एक साधन नहीं, बल्कि जीवन के सर्वोत्तम उद्देश्य की प्राप्ति का मार्ग है। यह व्यक्ति को आत्मनिर्भर, नैतिक और समाज के प्रति संवेदनशील बनाती हैं।

सन्दर्भ

1. कांद्रिक, कृष्ण मोहन. "भारतीय दर्शन में शिक्षा की अवधारणा." भारतीय दर्शन और शिक्षा, 2 (2020): 45–60.

2. शिवनाथ, राम. "वेदांत दर्शन और शिक्षा के सिद्धांत." भारत में शिक्षा दर्शन (2019): 87–102.

3. सिद्धार्थ, मणि. "भारतीय शिक्षा में संस्कृत और नैतिकता का स्थान." भारतीय शास्त्रों में शिक्षा (2018): 112–128.

4. रमेश, कुमार. "आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भारतीय शिक्षा दर्शन." शिक्षा में धार्मिक दृष्टिकोण (2017): 150–167.

5. जैन, मोहनलाल. "सांख्य दर्शन और शिक्षा के सिद्धांत." भारतीय दर्शन की समीक्षा (2021): 203–215.

6. पंत, रविंद्र. "योग दर्शन और शिक्षा के उद्देश्य." योग और शिक्षाः एक सांस्कृतिक अध्ययन (2019): 77–93.

7. कृष्णा, देवेंद्र. "भारतीय दर्शन में शिक्षा का स्थान और महत्व." भारतीय शिक्षा के आदर्श (2020): 22–35.

8. गोपीनाथ, शंकर. "भारतीय शास्त्रों में शिक्षा के सिद्धांतः वेदांत और सांख्य का अध्ययन." भारतीय दर्शन में ज्ञान और शिक्षा (2022): 190–202.

9. नंदलाल, भास्कर. "भारतीय शिक्षा दर्शन में तात्त्विक और मानसिक दृष्टिकोण." भारतीय शिक्षा के मापदंड (2021): 55–70.

10. सुरेश, देव. "स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण से भारतीय शिक्षा दर्शन." विवेकानंद और शिक्षा दर्शन (2018): 133–146.